International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 7 Issue 09 Ver. II ||September 2018 || PP 63-65

भारतीय चिन्तन और दलित समस्या

डॉ जितेंद्र कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग एस. एम. कॉलेज चंदौसी

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर ही वह अपनी सम्पूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति और अपना सर्वांगीण विकास करता है। परन्तु उनका विकास तब सम्भव नहीं हो पाता जब उसको उपेक्षित समझा जाता है। अर्थात उसको जाति, क्षेत्र, कुल, वर्ण, धर्म के आधार पर उपेक्षित समझकर उसका अनादर किया जाता है। उसकी मानसिक स्थिति को तारतार कर उसके मनोबल को कदम–कदम रोंदने का प्रयास किया जाता है। प्राचीन काल से समाज वर्गो में बंटा हुआ है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। शूद्र के स्थान पर दलित शब्द का प्रयोग किया जाता हैं। ''जिसका अर्थ– जिसका दलन, शोषण और उत्पीड़न किया गया हो।'' सामान्यतः 'दलित' का अर्थ है मानवीय अधिकारों से वंचित, सामाजिक तौर पर नकारा गया हो ।

डॉ. भीमराव जी अम्बेडकर को भारत में अछूतों के अधिकारों के लिए लड़ने वाले समाज सुधारक के रूप में जाना जाता है वह दलितों, गरीबों तथा हरिजनों के लोकप्रिय नायक थे। उन्होने स्वयं भेदभाव झेला था इसलिए उन्हें दलितों के साथ होते भेदभाव पूर्ण सामाजिक वातावरण को बदलने का प्रयास किया। डॉ. अम्बेडकर एक अध्ययवसायी, लेखक, प्रखर वक्ता, समाज–वैज्ञानिक, संविधान–विज्ञ, षिक्षाषास्त्री, समाजसुधारक, राजनीतिक होने के साथ–साथ सामाजिक न्याय पर आधारित आधुनिक भारत के निर्माता के रूप में भी उनका नाम स्मरणीय है। डॉ. अम्बेडकर का महत्वपूर्ण लक्ष्य था न्यायपूर्ण समाज की स्थापना करना।

भारतीय समाज में दलित जनचेतना के कार्यो को शुरू करने का कार्य अंग्रेजी शासन काल के दौरान ही हुआ। यद्यपि अंग्रेज देष की सामाजिक संरचना में किसी भी तरह का हस्तक्षेप पसंद नहीं करते थे इसके बावजूद मानवीय अधिकारों के संदर्भ में उनकी विचारधाराएं इतनी प्रबल थी कि उन्हें दलितों के अधिकारों के संदर्भ में सोचने को मजबूर होना पड़ा।

भारत में दलित आंदोलन की शुरूआत ज्योतिराव गोविंदराव फुले के नेतृत्व में हुई। ज्योतिबा फुले जैसे महान दलित क्रांतिकारी व डॉ. अम्बेडकर जिन्होने दलितों में भी दलित कहे जाने वाले अछूतों के सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक अधिकारों की पुरजोर मांगे ही नहीं की बल्कि उसके लिए जीवन पर्यन्त प्रयास भी किया है। जिसके परिणामस्वरूप आज भी दलितों में जनचेतना का सदृष्य दिखता है।

ज्योतिबा ने भारतीय समाज में दलितों को एक ऐसा पथ दिखाया था जिस पर आगे चलकर दलित समाज और अन्य समाज के लोगों ने चलकर दलितों के अधिकारों की कई लड़ाई लड़ी। यू ंतो ज्योतिबा ने भारत में दलित आंदोलनों का सूत्रपात किया था लेकिन इसे समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का काम बाबा साहब अम्बेडकर ने किया।

डॉ. अम्बेडकर ने समाज के सबसे निचले स्तर पर जी रहे दलितों के लिए समग्रता, सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक करों की भी वकालत की।

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार नारी, शूद्र व दलित सहित भारत का अधिकांष भाग सामाजिक अन्याय का षिकार था। ये समाज के वे वर्ग थे जो सामाजिक व नागरिक अधिकारों से तो वंचित थे ही साथ में विभिन्न प्रकार की निर्योग्यताओं के भी षिकार थे।

15 अगस्त 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद, कांग्रेस के नेतृत्व वाली नई सरकार अस्तित्व में आई तो उसने अम्बेडकर को देष का पहले कानून मंत्री के रूप में सेवा करने के लिए आमंत्रित किया, जिसे उन्होने स्वीकार कर लिया। 29 अगस्त 1947 को अम्बेडकर को स्वतंत्र भारत के नए संविधान की रचना के लिए बनी संविधान मसौदा समिति के अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया।

डॉ. अम्बेडकर ने महिलाओं के लिए व्यापक आर्थिक ओर सामाजिक अधिकारों की वकालत की ओर अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोगों के लिए सिविल सेवाओं, स्कूलों और कॉलेजों की नौकरियों में आरक्षण प्रणाली शुरू करने के लिए सभा का समर्थन भी हासिल किया।

दलित जातियां सिर्फ पिछड़ी हुई ही नहीं है वरन् उनके साथ कई समस्याएं भी हैं। इसलिए कोई प्रयास या प्रोत्साहन तब तक उनके उत्थान में सहायक नहीं हो सकता जब तक कि सबसे पहले उनकी बाधा दूर न की जाए।

दलितों के विकास की समस्या को सामाजिक समस्या कहा जाता है इसलिए इसका समाधान सामाजिक मंच पर खोजा जाए। अम्बेडकर जी कहते हैं कि मुझे आष्यर्च है कि उच्च वर्णों का भी ऐसा ही दृष्टिकोण है। मेरा यह विचार है कि यह दृष्टिकोण अपनाने वाले यह भूल जाते हैं कि मानव समाज में प्रत्येक समस्या एक सामाजिक समस्या है लेकिन छुआछूत राष्ट्रीय एकता में बाधक समस्या के रूप में परिलक्षित हो रही है। निष्चय की यह हल हो सकती है। सरकार उन सभी बाधाओं को दूर कर सकती है जो अस्पृष्यों को उनकी दयनीय दषा में रहने के लिए विवष करती है। डॉ. अम्बेडकर ने दलितों को अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने का आह्वान किया। मिसाल के तौर पर दलितों को सार्वजनिक जलाषयों से पानी लेने के लिए मनाही थी इसके विरूद्ध सन् 1927 में अम्बेडकर में महाड़ के चावदार तालन से दलितों को पानी लेने के लिए एक सत्याग्रह का नेतृत्व किया जिसमें अम्बेडकर की जीत हुई। सार्वजनिक हिन्दु मन्दिरों में अस्पृष्यों को प्रवेष दिलाने के उद्देष्य से अम्बेडकर ने दलितों के विभिन्न आंदोलनों का नेतृत्व किया इन आंदोलनों में अमरावती में अम्बा देवी मन्दिर प्रवेष (1927), बम्बई में गणपति प्रांगण प्रवेष (1929) तथा नासिक में कालाराम मंदिर (1930) प्रमुख हैं।

डॉ. अम्बेडकर के प्रयासों से ही "पूना पैक्ट" (1932) के द्वारा दलितों को विधानमण्डल में तुलनात्मक रूप से अधिक स्थान आरक्षित किये जाने तथा उन्हें सुविधाएं प्रदान किये जाने की बात स्वीकार की गयी "पूना पैक्ट" वस्तुतः एक संघर्षषील योद्धा की अप्रतिम सूझ–बूझ और दूरदृष्टि का परिचायक है जो आगे चलकर राष्ट्रीय आंदोलन की सफलता व सामाजिक न्याय के लिए दलितों द्वारा किये गये संघर्ष के इतिहास में मील का पत्थर साबित हुआ।

डॉ. अम्बेडकर ने दलितों आंदोलनों को नई दिषा प्रदान करने और बहिस्कृत समाज की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक आवाज को और मजबूत करने के लिए सन् 1927 ई. मार्च 14 को "बहिस्कृत भारत" का प्रकाषन शुरू किया। यह मराठी भाषा में थी सन् 1930 ई. में उन्होने "जनता शीर्षक" से एक अन्य पत्रिका का भी प्रकाषन किया। यह पत्रिका बाद में सन् 1956 ई. में "प्रबुद्ध भारत" नाम से निकलने लगी। इन पत्रिकाओं के जरिए उन्होने दलितों की अस्मिता को उजागर करने के साथ–साथ हिन्दु धर्म की कमजोरियों तथा अस्पृष्यता के व्यवहार और जाति–व्यवस्था पर चोट की।

अस्पृष्यता को दलितों के विकास में बाधा मानते हुए अम्बेडकर ने लिखा– "अस्पृष्यता शब्द में उनकी विपत्तियों और कष्टों का निचोड़ आ जाता है।" अस्पृष्यता ने न केवल उनके व्यक्तित्व के विकास को अवरूद्ध कर दिया है, बल्कि उनके आर्थिक उन्नति के रास्ते में भी कांटे बोए हैं। उसने उनके कपितय नागरिक अधिकारों को भी हड़प लिया है।

दलित समाज को इन संकीर्ण विचारों से मुक्ति दिलाने के लिए अनेक विद्वानों ने अपने विचारों के आधार पर समाज में परिवर्तन लाने का प्रयास किया है । आज दलित सहित्य में भी विभिन्न साहित्यकारों ने अपना योगदान दिया है। अत्याधिक सहन करना भी कायरता होती है। अपने सुप्त पड़ी अर्थात् मृतक सोच को जागृत करना होगा अपने लिए, नहीं तो अपने आने वाली पीड़ियों के संघर्ष जारी रखना होगा। क्योंकि संघर्ष के बिना कोई भी कार्य सम्भव नहीं हैं । विभिन्न विद्वान – डॉ0 भीम राव अम्बेडकर, राजामोहन राय, दयानन्द सरस्वती, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, ज्योतिबा फुले, महात्मा गांधी, महात्मा बुध, सन्त कबीर, रैदास तथा अनेक साहित्यकारों नें इस सुधारात्मक यज्ञ में अपनी – अपनी अदभूत वैचारिक आहुतियाँ डाली है। जिसके आधार पर समाज के परिवर्तित रूप की कल्पना कर पाना सम्भव हुआ।

न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द राणाडे के अनुसार – ''सच्चा सुधारक कोरे स्लेट पर नहीं लिखता। जो वाक्य आधा – अधूरा रह चुका है उसे बार – बार पूर्ण करते जाना, यही उसका काम होता है । यथार्थ और यथार्थ की सहायता से ही उसे आदर्श का निर्माण करना पड़ता है।' डॉ0 बाबा भीमराव अम्बेडकर एक महान युगपुरूष थे । जिन महापुरूषों ने तथा नेताओं ने समाज को नई दिशा तथा नया मोड़ देने का प्रयत्न किया है । उन महापुरूषों नेताओं की सूची में डॉ0 भीमराव अम्बेडकर को अब इतिहास ने ही सम्मानपूर्ण स्थान दिया है। भविष्य की पीढ़ियां उनकी ओर एक महामानव के रूप में ही देखेंगी । डॉ0 अम्बेड़कर ने जाति तथा वर्ण व्यवस्था तोड़ने का सर्वाधिक उतम मार्ग आन्तरजतीय विवाह बतलाया। महर्षि दयान्नद सरस्वती ने भी इसी बात का आग्रह किया । 'प्राचीन भारतीय संस्कृति में वर्ण व्यवस्था के अंतर्गत जातियों – उपजातियों में विभाजित समाज में सवर्णो के द्वारा दलितों का अमानवीय उत्पीड़न होता रहा । शोषण दोहन की वह प्रक्रिया सदियों तक चलती रही और समाज भी दलितों की आबादी का एक बहुत बड़ा हिस्सा अपनी समाजिक अस्मिता के लिए संघर्ष कर रहा है।

महात्मा गांधी

वश्व क्षितिज पर महात्मा गांधी एक ऐसे युग पुरूष का नाम है जिसने एक साथ सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक धरातल पर अपने नेतृत्व का लोहा मानने को विश्व के जनमानस को विवश कर दिया । महात्मा गांधी ने भारत का सूक्ष्म अध्ययन किया और अनुभव किया कि भारतीय समाज व्यवस्था का एक अंग जिसे अस्पृश्य अथवा अछूत कहा जाता है, पीड़ित है, शोषित है, दलित है । अतः समाज के अन्य 'त्रिवर्ण' के हृदय परिवर्तन की आवश्यकता है । उन्होंने अस्पृश्यों (अछूतों) एक नये सम्मानजनक नाम 'हरिजन' से सम्बंधित किया और उनके लिए समाज में फैली हुई अस्पृश्यता की भावना को दूर करने हेतु हिन्दू जन – मानस का हदय परिवर्तन करने का प्रयास किया ।

दलित समस्या के प्रति गांधी जी पूर्णतया जागरूक चिन्तक थे । उन्होंने 'दलितों' के लिए ही 'हरिजन' पत्र प्रकाशित किया अपने को 'हरिजन सेवक' का नाम दिया । मात्र 'हरिजन सेवा' का सर्वोपरि नाम पाकर उन्होंने अपने

कर्तव्यों की इति श्री नही कर ली वरन् उसके अनरूप कार्य भी किए । इसी अध्यात्मवादी तरीके का प्रयोग कर गांधी जी एक ऐसा समाज चाहते थे, जिसमे स्त्री – पुरूष को समान अधिकार प्राप्त हों, जहां सब प्रेम – भाव से रहें, जहां साम्प्रदायिकता और अस्पृश्यता जैसी कुरीतियॉ न हों, गांधी जी की रामराज्य की स्थापना देश के सामाजिक उत्थान की चरम सीमा है । अस्पृश्यता के साथ संग्राम एक धार्मिक संग्राम है, यह संग्राम मानव सम्मान की रक्षा और हिन्दू धर्म के बहुत ही शक्तिशाली सुधार के लिए आवश्यक है । गांधी की इच्छा थी कि हरिजनों को मुख्य राष्ट्रीय जीवनधारा से जोड़ा जाए । इसके लिए हर हिन्दू को हर प्रकार के त्याग के लिए तैयार रहना चाहिए । हरिजनों को अपनाना हर एक हिन्दू का कर्तव्य हो जाना चाहिए । उनके सुख – दुख में भाग लेना चाहिए । अस्पृश्यता निवारण के लिए ही 30 सितम्बर 1932 में 'हरिजन सेवक संघ' की स्थापना की । गांधी जी ने 'अस्पृश्यता निवारण' को ही अपने राजनैतिक समाजिक जीवन का 'मुख्य एजेण्डा' बना लिया ।

भारतीय संविधान जहां महिलाओं, अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों एवं अल्पसंख्यकों को न्याय प्रदान करता है वहीं इस बात का भी प्रावधान करता है कि कोई भी वर्ग या व्यक्ति चाहे वह कितना ही सबल क्यों न हो संवैधानिक दायरे के अंतर्गत कानूनी प्रक्रिया को अपनाये बिना किसी भी व्यक्ति, चाहे वह कितना भी निर्बल क्यों न हो, को उसके न्यायपूर्ण अधिकार से वंचित नहीं कर सकता।

निष्कर्ष

भारतीय जाति व्यवस्था दलित–चेतना की जननी है क्योंकि इसी जाति–व्यवस्था के कारण उपजी त्रासदी ने दलितों को दलित और शोषित बनने को विवश किया । शोषण सहते–सहते जब 'दलित' की कमर टूटने लगी तो वह अकड़ कर सीधा खड़ा हो गया । शोषक को ललकारने लगा । महान चिन्तकों के दिशा निर्देशन में दलितों में चेतना एवं जागरण का प्रादुर्भाव हुआ । भारतीय संविधान में दलितों की समस्याएं दूर करने उनके जीवन स्तर को सुधारने तथा उन्हें सामाजिक न्याय दिलाकर मुख्य राष्ट्रीय जीवन – धारा में जोड़ने वाले अनेक प्रावधानों की व्यवस्था की गयी जिसके फलस्वरूप दलितजनों में नवीन चेतना और जागरण का संचार हुआ जो कि सामाजिक समानता एवं सामाजिक प्रजातन्त्र के लिए अति आवश्यक है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. सिहं, डॉ. रामगोपाल "सामाजिक न्याय एवं दलित संघर्ष" राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर 2010
2. भारती "अस्पृष्यता निवारण में गांधी व अम्बेडकर की भूमिका" 1993
3. सिंह, आर.जी. "भारतीय दलितों की समस्याएं एवं उनका समाधान" मध्यप्रदेष हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 1986
4. सिंह, मुकेष "डॉ. भीमराव अम्बेडकर", वंदना पब्लिकेशन्स
5. वास्कर, डॉ. आनंद, "हिन्दी साहित्य में दलित चेतना"
6. डॉ0 ललिता कौशल, हिन्दी दलित साहित्य और चिन्तन, पृ0 78